अस्सी दिनों में दुनिया की सैर

जूल्स वर्न

अस्सी दिनों में दुनिया की सैर

जूल्स वर्न

अध्याय 1
यात्रा की शुरुआत

आज से कोई सौ साल पहले एक आदमी रहता था जिसका नाम था फिलास फौग. बहुत सालों तक उसने बिल्कुल एक शांत ज़िन्दगी बिताई थी. वो हर रोज़ क्लब जाता. क्लब, रईस लोगों के मिलने का एक अड्डा था .

रोजाना फौग
अपने घर से
ठीक 11.30 बजे
निकलता था.
फिर वो 576
कदम चलकर
क्लब पहुँचता
था.

वहां वो दोपहर का खाना खाता था.

भोजन के बाद फौग तीन अखबारों का हरेक पन्ना बड़े ध्यान से पढ़ता था. उसके बाद वो शाम का नाश्ता करके अपने दोस्तों के साथ ताश खेलता था.

रात को बारह बजते ही फौग घर वापिस जाकर सो जाता था. अगले दिन भी वो बिल्कुल वही करता था.

पर एक बुधवार को सब कुछ बदल गया. फौग ने अखबार में एक आश्चर्यजनक खबर पढ़ी.

“ज़रा इस खबर को पढ़ो,” उसने अपने दोस्तों से कहा. “इस खबर के अनुसार सिर्फ अस्सी दिनों में पूरी दुनिया की सैर करना संभव है!”

मित्रों के हंसने के बावजूद फौग को लगा कि वो इस मुश्किल काम को कर पाएगा.

जब एक दोस्त ने शर्त लगाई कि वो असंभव काम था, तब फौग ने कहा, “मैं बीस हज़ार पौंड की शर्त लगाता हूँ कि मैं 80 या उससे कम दिनों में दुनिया की सैर पूरी करूंगा!”

सबको लगा कि फौग पगला गया था. पर फौग ने दृढ़ निश्चय कर लिया था.

“मैं अब 21 दिसंबर को वापिस आऊँगा,” फौग ने कहा.

जैसे ही फौग घर पहुंचा उसने अपने बटलर (नौकर) से सामान बाँधने को कहा.

भाग्यवश, बटलर ने पहले सर्कस में काम किया था इसलिए उसने झट से फौग की अटैची तैयार कर दी.

दस मिनट बाद फौग, अपने बटलर के साथ स्टेशन पर था....

8.45 पर ट्रेन छूटी. उसके साथ फौग अपने बटलर के साथ दुनिया की सैर करने के लिए रवाना हुआ.

वे लोग समुद्र तट की ओर जा रहे थे. वहां से वे फ्रांस के लिए एक नाव पकड़ते. पर शायद वो वहां किसी मुश्किल में भी फंस सकते थे.

अध्याय 2
अफ्रीका में आगमन

जब फौग यूरोप को पार कर रहा था तब पुलिस, एक भगोड़े चोर को पकड़ने की कोशिश में थी. कुछ दिनों पहले ही उस चोर ने बैंक ऑफ़ इंग्लैंड से एक बहुत बड़ी रकम - 55 हज़ार पौंड चुराए थे.

पुलिस इंस्पेक्टर फिक्स को लगा कि चोर यूरोप से अफ्रीका भागने की कोशिश करेगा. इसलिए जब फौग, सुएज कैनल पार करके नार्थ अफ्रीका पहुंचा तो इंस्पेक्टर फिक्स वहां बंदरगाह पर उनका इंतज़ार कर रहा था.

फौग ने अपने बटलर को पासपोर्ट पर ठप्पा लगवाने के लिए भेजा. “देखो, मुझे इस यात्रा का सबूत ज़रूर चाहिए,” फौग ने बटलर को समझाते हुए कहा.

गलती से बटलर ने इंस्पेक्टर फिक्स से पासपोर्ट दफ्तर जाने का रास्ता पूछ लिया.

जब फिक्स ने पासपोर्ट देखा तो उसने चैन की सांस ली. फौग का वर्णन, भगोड़े चोर से बिल्कुल मिलता था. फिक्स को लगा कि अब वो जल्द ही चोर को पकड़ लेगा.

पर गिरफ्तार करने से पहले इंस्पेक्टर फिक्स को कुछ कागज़ात चाहिए थे, जो उसे मुजरिम को पकड़ने की इजाज़त देते.

इसलिए फिक्स ने पता किया कि फौग कहाँ जा रहा था. फिर उसने एक अर्जेंट टेलीग्राम लन्दन भेजा. "मैं चोर का पीछा कर रहा हूँ. मैं उसके साथ इंडिया जा रहा हूँ. कृपा कर गिरफ़्तारी का वारंट बॉम्बे भेजें."

उसके बाद इंस्पेक्टर फिक्स अपने सामान के साथ इंडिया जाने वाले जहाज़ पर रवाना हुआ.

यात्रा काफी कठिन थी, पर फौग जहाज़ पर बिल्कुल शांत रहा. उसने दिन में चार बार भोजन किया और बाकी समय ताश खेला. फौग को ऐसा लगा जैसे वो घर पर ही हो.

इत्तिफाक से जहाज़ दो दिन पहले ही बॉम्बे पहुँच गया. पर इंस्पेक्टर फिक्स, फौग को गिरफ्तार नहीं कर पाया, क्योंकि तब तक गिरफ्तारी का वारंट बॉम्बे नहीं पहुंचा था.

“बस एक ही उम्मीद बची है,” फिक्स ने निश्चय किया, “मुझे यह पक्का करना होगा कि फौग इंडिया छोड़कर न जाये.”

इंडिया में फौग का बटलर एक मंदिर में गया. पर उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि उसे मंदिर के बाहर अपने जूते उतारने चाहिए थे. जब पुजारी ने बटलर से जूते उतारने के लिए कहा तो बटलर पुजारी से लड़ने लगा.
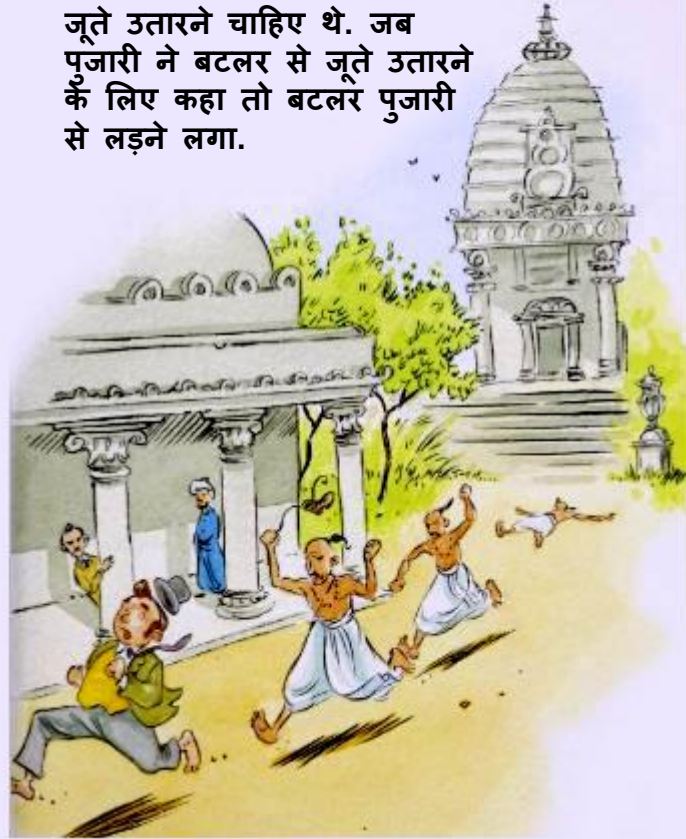
यह देखकर फिक्स बहुत प्रसन्न हुआ. “मैंने फौग के नौकर को इंडिया में कानून तोड़ते हुए देखा है. अब मैं बटलर और उसके मालिक दोनों को, यहीं इंडिया में, गिरफ्तार कर सकता हूँ!”

फिक्स ने फौग और बटलर का पीछा किया. उसने उन दोनों को एक ट्रेन पकड़ते हुए देखा. “चलो, तुम लोगों से कलकत्ते में मुलाक़ात होगी,” फिक्स खुद से बड़बड़ाया. “मिस्टर फौग, मैं वहां तुम्हें गिरफ्तार करूंगा.”

अध्याय 3
फौग ने बचाया

फिर उनकी ट्रेन आगे बढ़ी. रास्ते में उन्हें आलीशान मंदिर, कॉफ़ी और कपास के खेत दिखे. बटलर इस नए मुल्क को आश्चर्य से देखता रहा. फौग को ट्रेन में ताश खेलना वाला एक मुसाफिर भी मिल गया.

पर तीसरे दिन सफ़र के दौरान ट्रेन अचानक रुक गई.

“यहाँ पर ट्रेन की पटरी ख़त्म होती है. यहाँ से पचास मील दूर इलाहाबाद में ट्रेन की पटरी दुबारा शुरू होगी,” ड्राईवर ने कहा.
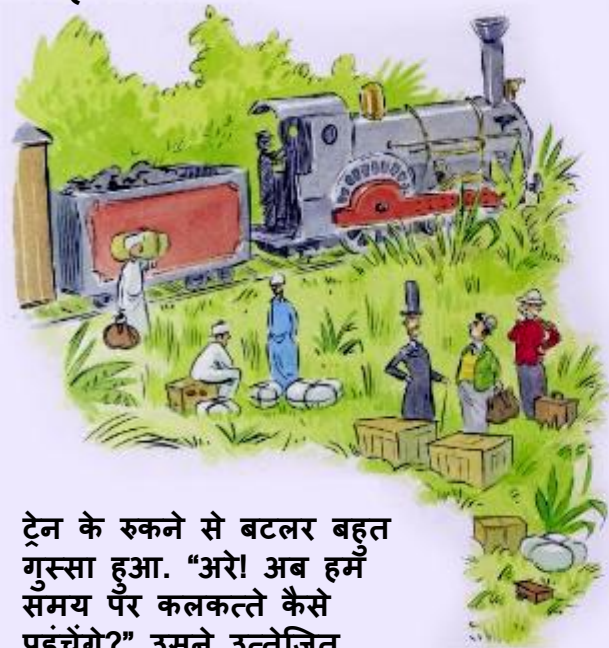
ट्रेन के रुकने से बटलर बहुत गुस्सा हुआ. “अरे! अब हम समय पर कलकत्ते कैसे पहुंचेंगे?” उसने उत्तेजित होकर पूछा.

फौग इससे बिल्कुल चिंतित नहीं हुआ. “मैंने देरी को ध्यान में रखकर योजना बनाई है,” फौग ने शांत भाव से कहा. “हमें बस अब आगे यात्रा को कोई दूसरा साधन ढूँढना होगा.”

बटलर, यात्रा का कोई अन्य साधन खोजने निकला. जल्द ही वो उत्तर के साथ वापिस लौटा.

हाथी की सवारी कुछ महंगी थी, पर फौग को उससे कुछ ख़ास फर्क नहीं पड़ता था. फौग ने अपने ताश खेलने वाले साथी को भी आमंत्रित किया.

उन्होंने एक गाइड को भी अपने साथ लिया. आधे घंटे बाद वो एक घने जंगल में से गुजर रहे थे. फौग का बटलर ख़ुशी से ऊपर-नीचे हिल रहा था. थोड़ी-थोड़ी देर बाद बटलर, हाथी को एक शक्कर का ढेला खाने को देता था.

इस तरह वे कई घंटे सफ़र करते रहे. रास्ते में उन्हें खजूर के पेड़ और रेत के मैदान दिखे. उस रात उन्होंने एक खंडहर बंगले में आराम किया.

सुबह छह बजे उन्होंने अपनी यात्रा दुबारा शुरू की. नाश्ते के लिए उन्होंने एक पेड़ से केले तोड़कर खाए. एक घने जंगल को पार करने के बाद उन्हें संगीत और लोगों की आवाजें सुनाई दीं. वहां पेड़ों के झुरमुटे के बीच, लोगों एक बड़ा जुलूस गुज़र रहा था.
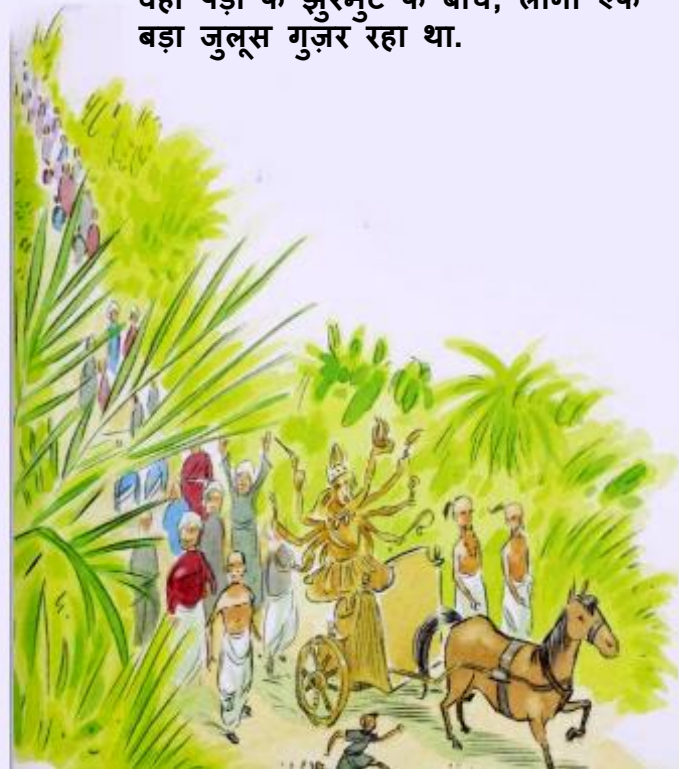
उस जलूस में कुछ योद्धा अपने मृत राजकुमार की अर्थी ले जा रहे थे. उनके पीछे-पीछे एक पुजारी एक सुन्दर लड़की को खींच रहा था.

बटलर को यह देखकर बड़ा धक्का लगा. “अरे! यह लोग क्या करने की कोशिश कर रहे हैं?” वो चिल्लाया.

“यह यहाँ का रिवाज़ है,” गाइड ने समझाया. “जब राजकुमार मरता है तो उसकी पत्नी को भी उसके साथ मरना होता है, जिससे वो दोनों एक-साथ स्वर्ग जा सकें.”

“कल, राजकुमार की पत्नी भी अपने पति के साथ जलाई जाएगी.”

बटलर को यह सहन नहीं हुआ. फौग जो कभी विचलित नहीं होता था भी यह सुनकर तिलमिलाया.

“देखो, अभी बारह घंटे बाकी हैं,” फौग ने कहा, “हम उस निर्दोष महिला को बचाने की कोशिश तो कर ही सकते हैं.”
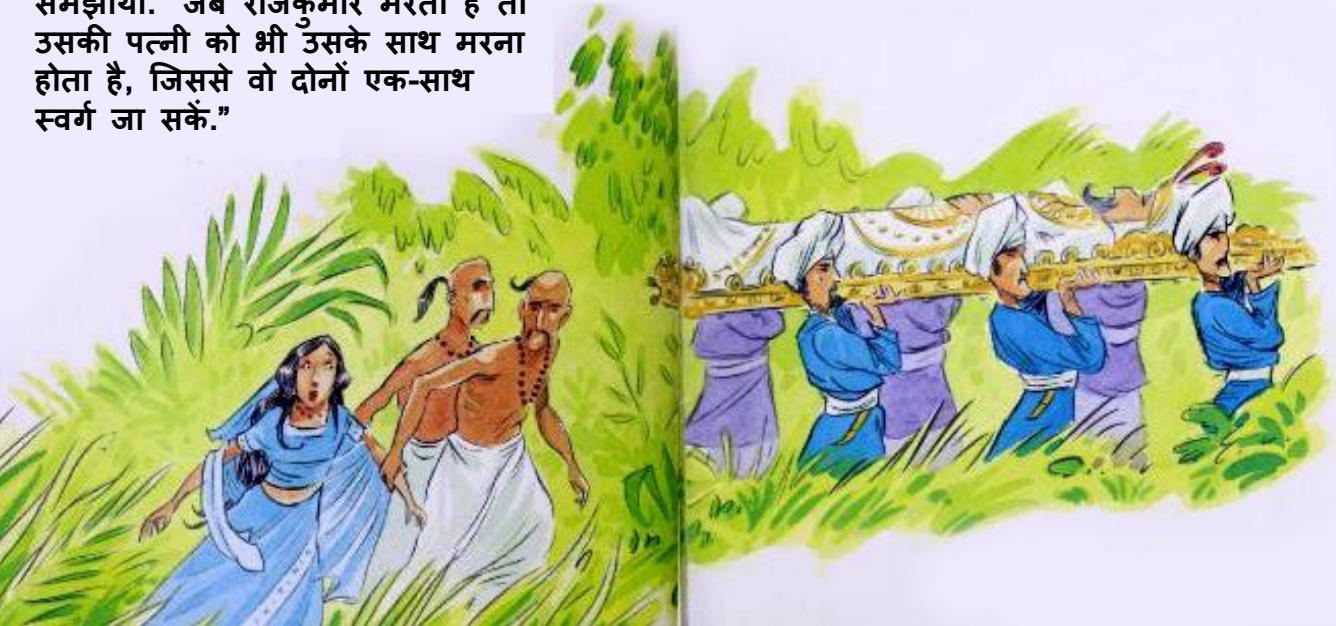
रात होने तक जलूस एक छोटे से मंदिर पर पहुँचा. राजकुमारी को वहां एक मज़बूत कमरे में बंद कर दिया गया. राजकुमारी को बचाने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी. तभी बटलर के दिमाग में एक अच्छा आईडिया आया....

अगले दिन सुबह राजकुमारी को भी अपने मृत पति के पास एक अर्थी पर लिटाया गया. उसके बाद पुजारिओं ने बड़ी आग जलाई. सारी जनता इस नज़ारे को चुपचाप देखती रही. अचानक हवा में ज़ोर-ज़ोर की चीखें उठने लगीं. कुछ लोग उठे और माजरे के जायजा लेने लगे. उन्होंने देखा कि मृत राजकुमार, अपनी अर्थी पर बैठा हुआ था!

एक भूत ने राजकुमारी को धुएं के बादलों में से उठाया. फिर वो घोड़े पर सवार होकर राजकुमारी को जंगल में लेकर कहीं विलीन हो गया.

“अब आगे चलें,” भूत ने फौग से कहा. बटलर ने खुद राजकुमार का भेष बनाया था. उसके बाद वे लोग वहां से भागे. पीछे से लोगों ने उनपर हमला किया पर वे गोलियों और भालों से बचते हुए वहां से किसी तरह बच निकले.

अध्याय 4
धोखा!

इलाहाबाद में फौग ने हाथी, अपने गाइड को दे दिया. फिर वो अपने बटलर के साथ ट्रेन में सवार हुआ. पर जैसे ही वे कलकत्ते पहुंचे वहां स्टेशन पर ही फौग और उसके नौकर को पुलिस ने गिरफ्तार किया और उन्हें थाने ले गए.

फौग ने अपने नौकर के साथ एक हफ्ता जेल में बिताया. नौकर को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा. उसके बाद कोर्ट ने फौग पर दो हज़ार पौंड का जुर्माना लगाया.

"ठीक है," जज ने कहा. "तुम अब जाने के लिए मुक्त हो. पर अगर तुम वापिस नहीं आये तो फिर हम तुम्हारी जमानत ज़प्त कर लेंगे."

उसके बाद फौग ने होंग-कोंग के लिए दूसरा जहाज़ पकड़ा. जहाज़ चलने में सिर्फ एक घंटा बाकी था.

फिक्स को बहुत गुस्सा आया. "चलो, होंग-कोंग तो ब्रिटिश कॉलोनी है. मैं वहां पर फौग को गिरफ्तार कर सकता हूँ," फिक्स ने कहा.

जिस राजकुमारी की फौग ने जान बचाई थी वो भी अपने चचेरे भाई से मिलने, उनके साथ होंग-कोंग गई. जब उनका जहाज़ होंग-कोंग में कोयला भरने के लिए रुका तब फौग और राजकुमारी एक बग्घी में बैठकर शहर घूमने गए.

वहां रास्ते में उन्हें काली मिर्च और जायफल के पेड़ दिखे. उन्हें खीसे नपोरते बंदरों के झुंड और चीते भी दिखे.

अंत में उनका जहाज़ एक तूफ़ान में फंसा. बहुत तेज़ आंधी चली. फौग शांत रहा पर उसका बटलर बहुत घबरा गया. "मुझे लगता है कि हम अपना अगला जहाज़ नहीं पकड़ पाएंगे," उसने कहा.

नतीजा यह हुआ कि वे होंग-कोंग एक दिन बाद पहुंचे. योकोहामा, जापान जाने वाले जहाज़ को फौग पकड़ नहीं पाए.

"मुझे पता था कि ऐसा ही होगा," बटलर ने कहा.

इंस्पेक्टर फिक्स को बड़ी ख़ुशी हुई. "अब फौग, मैं तुम्हें गिरफ्तार कर सकता हूँ!" पर तकदीर फिक्स के साथ नहीं थी.

कुछ ऐसा हुआ कि योकोहामा जाने वाला जहाज़ भी लेट हो गया. इसलिए फौग उस जहाज़ को पकड़ पाए. बुरी बात यह हुई, कि इंस्पेक्टर फिक्स के कागज़ अभी तक नहीं आए.

अब इंस्पेक्टर फिक्स काफी परेशान और निराश थे. वे कागज़ आने तक फौग को वहीं होंग-कोंग में ही रोकना चाहते थे.

उस रात फौग एक होटल में ठहरे और फिर राजकुमारी के चचेरे भाई को ढूँढने निकले. उन्होंने अपने बटलर को जहाज़ में तीन बर्थ रिज़र्व करने के लिए भेजा.

बंदरगाह पर नौकर को पता चला कि जहाज़ उस दिन शाम को ही रवाना हो रहा था. फिक्स को भी यह जानकारी मिली.

"मुझे अब अपने मालिक को खोजना है!" फौग के बटलर ने रोते हुए कहा. पर इंस्पेक्टर फिक्स ने नौकर को शराब पीने के लिए एक सराय में बुलाया.

मैं एक जासूस हूँ और तुम्हारा मालिक एक बड़ा चोर है!" फिक्स ने सराय में नौकर से कहा.

"बकवास!" बटलर चिल्लाया.

"फौग को यह पता नहीं चलना चाहिए कि उसका जहाज़ आज शाम जाने वाला है," फिक्स ने सोचा. इसलिए उसने बटलर को जमकर शराब पिलाई.

कुछ देर बाद बटलर झूमने लगा और उसे नींद आ गई. इस बीच इंस्पेक्टर फिक्स वहां से कट लिया.

अगले दिन सुबह फौग बंदरगाह पर गया. उसके साथ अभी भी राजकुमारी थी. राजकुमारी का चचेरा भाई होंग-कोंग छोड़ चुका था. फौग का जहाज़ भी होंग-कोंग से रवाना हो चुका था. फौग के बटलर का कहीं कोई अतापता नहीं था.

अगला जहाज़ एक हफ्ते बाद ही जाने वाला था. पर फौग ने हिम्मत नहीं हारी और अपना प्रयास ज़ारी रखा. उन्होंने जापान पहुँचने के लिए किसी और जहाज़ की तलाश की.

अंत में फौग को एक छोटे जहाज़ का कप्तान मिला. वो उन्हें शंघाई तक ले जाने को तैयार हो गया. "आप शंघाई से योकोहामा के लिए एक दूसरा स्टीमर पकड़ सकते हैं," उसने कहा. बंदरगाह पर ही फौग को इंस्पेक्टर फिक्स मिले. उन्होंने फिक्स को भी अपने साथ चलने का निमंत्रण दिया.

जहाज़ में रवाना होने से पहले फौग ने होंग-कोंग को पूरी तरह छान मारा पर उनका बटलर उन्हें कहीं नहीं मिला.

दो दिनों तक उनका छोटा जहाज़ लहरों को काटता हुआ तेज़ी से आगे बढ़ता रहा. फिर एक ज़ोर का तूफ़ान आया और एक विशालकाय लहर जहाज़ से आकर टकराई. उसके बाद जहाज़, समुद्र में एक गेंद जैसे इधर-उधर बहकने लगा.

जब तक तूफ़ान शांत हुआ, तब तक उनका काफी समय बर्बाद हो चुका था. सारे पाल लगाने के बाद भी अब उनका जहाज़ तेज़ी से आगे नहीं बढ़ रहा था.

तभी फौग को एक स्टीमर आता हुआ दिखाई दिया.

"यह स्टीमर शंघाई से योकोहामा जा रहा है," कप्तान ने कहा.

"उस स्टीमर को इशारा करके रोको," फौग ने कहा.

फिर एक धमाके के साथ एक राकेट हवा में तेज़ी से उस स्टीमर तक गया. स्टीमर रुका और फिर फौग, राजकुमारी और फिक्स उसमें सवार हुए.

पर इस बीच फौग के बेचारे बटलर का क्या हुआ?

बिल्कुल उसी समय उसकी आँख खुली जब जापान का जहाज़ जाने वाला था. वो दौड़ कर जहाज़ पर पहुंचा. उसे तब बहुत दुःख हुआ जब उसने वहां फौग को नहीं देखा.

इसलिए योकोहामा पहुँचने के बाद बटलर उलझन में फंस गया. उसे पता नहीं चला कि अब वो क्या करे. वो इधर-उधर भटक रहा था, तभी उसे एक पोस्टर दिखाई दिया.

“अगर मुझे उन नटों की टीम में शामिल होने का मौका मिले तो कितना अच्छा हो? “वे यहाँ से अमरीका जा रहे हैं, और मिस्टर फौग भी जापान से अमरीका जाने वाले हैं.”

"क्या तुम अपने सर के बल खड़े होकर गाना गा सकते हो. तुम्हारे बाएं पैर पर एक लट्टू होगा और दाएं पर एक तलवार होगी. क्या तुम कर पाओगे?" सर्कस के मालिक ने पूछा. फौग के बटलर ने अपना सर हिलाया. "चलो फिर तुम हमारे साथ आ जाओ."

उस शाम उसने पहले शो में भाग लिया. वो नटों के तिकोन में सबसे नीचे था. लोगों को शो बहुत पसंद आया. पर अचानक....

उसके बाद सारे नट गिर पड़े.

तभी बटलर को मिस्टर फौग दिखाई दिए और वो उनकी तरफ दौड़ा.

अध्याय 5
घर की ओर

उनके पास अभी एक-दूसरे को अपनी कहानी सुनाने का समय नहीं था. उन्होंने दौड़कर सैन फ्रांसिस्को जाने वाला जहाज़ पकड़ा. क्योंकि राजकुमारी के पास और कहीं जाने को नहीं था इसलिए वे भी उनके साथ-साथ चलीं. वो दिन-ब-दिन फौग से प्रेम करने लगीं.

जैसे-जैसे उनका जहाज़ आगे बढ़ा बटलर को लगा कि मिस्टर फौग अपनी शर्त जीत जायेंगे. पर फिर एक दिन उसे जहाज़ के डेक पर इंस्पेक्टर फिक्स दिखाई पड़ा. इंस्पेक्टर गुप्त रूप से उनका पीछा कर रहा था.

फौग के बटलर ने फिक्स को मारा.

“रुको!” फिक्स चिल्लाया. “मैं शायद पहले तुम्हारे खिलाफ रहा हूँ...”

“तुम थे..” बटलर चिल्लाया.

“ठीक है,” फिक्स ने सहमत होते हुए कहा, “मुझे अभी भी लगता है कि फौग एक चोर है.

पर अब मैं चाहता हूँ कि वो इंग्लैंड जाए. क्योंकि मैं अब उसे इंग्लैंड में ही पकड़ सकता हूँ.”

बटलर अपने मालिक मिस्टर फौग को परेशान नहीं करना चाहता था. इसलिए उसने फौग को फिक्स के बारे में कुछ नहीं बताया. पर जब फौग, सैन फ्रंसिसको में अपने पासपोर्ट पर ठप्पा लगवाने गया तब वहां अचानक उसकी भेंट फिक्स से हुई.

"कितने आश्चर्य की बात है!" फिक्स ने झूठ-मूठ कहा. फिर फिक्स भी उसी ट्रेन में सवार हो गया जिसमें फौग यात्रा कर रहा था. यह ट्रेन उन्हें अमरीका के पार ले जाती.

पेसिफ़िक रेलरोड पूरे अमरीका को पार कर न्यू-यॉर्क पहुँचती थी. ट्रेन पर सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध थीं – वहां पर दुकानें और रेस्टोरेंट्स थे. पर ट्रेन को तब रुकना पड़ता था जब जंगली भैंसे रेल की पटरी को क्रॉस करते थे.

अगली बाधा एक कमज़ोर पुल था. "मैं इस पुल को फुल स्पीड में पार करूंगा!" ड्राइवर ने कहा. पर उसने ट्रेन की रफ़्तार इतनी तेज़ की कि रेल के पहिए पटरियों से उठ गए.

ट्रेन लगभग उड़ती हुई पुल के दूसरे ओर पहुंची. पर जैसी ही ट्रेन उस पार पहुंची वैसे हीं पुल पूरी तरह टूट कर नदी में गिर गया.

उसके बाद उन्हें असली मुसीबत झेलनी पड़ी. जब ट्रेन कुछ पहाड़ियों के बीच से गुज़र रही थी तब कुछ सिओउक्स योद्धा ट्रेन की छत पर कूद पड़े. जल्दी ही उन योद्धाओं ने ट्रेन की कमान संभाली.

उसके बाद फौग का बटलर सक्रिय हुआ.

वो ट्रेन के नीचे-नीचे रेंगता हुआ सीधे इंजन तक पहुंचा. किसी ने उसे देखा नहीं.

फिर उसने इंजन को ट्रेन से अलग कर दिया. कुछ देर में ट्रेन एक स्टेशन के पास आकर रुक गई.

कुछ समय बाद फौग ने अपने बटलर को तलाशा, पर वो उसे कहीं नहीं मिला.

"योद्धा, आपके बटलर को अपने साथ बंदी बना कर ले गए!" गार्ड ने कहा.

उसके बाद फौग कुछ सैनिकों को लेकर पहाड़ियों में अपने बटलर को तलाशने गया.

बटलर को खोजने और फिर मुक्त कराने में उसे पूरा दिन लग गया. उन्हें रात को वहीं ठहरना पड़ा. वे सुबह को ही स्टेशन पर वापिस पहुंचे.

जब वो आए तब तक उनकी ट्रेन जा चुकी थी और अगली ट्रेन शाम को ही थी.

"मुझसे फिर गलती हुई," बटलर ने रोते हुए कहा. पर तब फिक्स ने उनकी मदद की.

"मुझे अभी एक आदमी मिला है जिसके पास बर्फ पर फिसलने वाली एक नाव है."

जल्द ही वे बर्फ पर फिसल रहे थे. तेज़ हवा नाव के पाल को धक्का दे रही थी, जिससे नाव तेज़ी से बर्फ पर फिसल रही थी.

वो इतनी तेज़ी से आगे बढ़े कि अगले ही स्टेशन पर उन्हें न्यू-यॉर्क जाने वाली ट्रेन मिल गई. उसके बाद ट्रेन धुंआ छोड़ती हुई तेज़ी से आगे बढ़ी. अभी भी फौग के शर्त जीतने की सम्भावना बची थी.

अंत में वे हडसन नदी के किनारे न्यू-यॉर्क स्टेशन पहुंचे. पर इंग्लैंड जाने का जहाज़ सिर्फ पैंतालिस मिनट पहले ही वहां से छूट चुका था.

कोई अन्य स्टीमर उन्हें अटलांटिक महासागर पार करवा कर समय पर नहीं पहुंचा सकता था. फौग का बटलर बहुत उदास हुआ पर फौग बंदरगाह पर हरेक जहाज़ में गया. अंत में उसे एक जहाज़ मिला जिसका कप्तान मुसाफिरों के लेने के लिए तैयार था.

वो जहाज़ फ्रांस जा रहा था. पर उससे फौग को कोई फर्क नहीं पड़ा. फौग ने कप्तान को उसके कमरे में बंद करके ताला लगा दिया. फिर फौग ने खुद स्टीमर की कमान को संभाला और जहाज़ की दिशा बदल दी.

वो जहाज़ काफी तेज़ था. पर सर्दी का मौसम होने के कारण तेज़ हवाएं चल रही थीं. तभी एक इंजिनियर ने आकर फौग को एक बुरी खबर सुनाई.

“बायलर में जलने वाला कोयला ख़त्म होने को आया ही!” उसने घबराते हुए कहा.

“इस समस्या को तो मेरा होशियार मालिक भी नहीं हल कर पायेगा,” बटलर ने कहा.

एक बार फौग ने फिर अपनी अकल से लोगों को आश्चर्य में डाला. उसने नाविकों से जहाज़ के मस्तूल के टुकड़े करने को कहा और उन्हें जहाज़ के बायलर में जलाने को कहा.

अगले तीन दिनों तक नाविकों ने जहाज़ के ब्रिज को काटकर जलाया....

फिर केबिन को...

फिर जहाज़ के डेक को...

अंत में जब जहाज़ इंग्लैंड पहुंचा तो सिर्फ उसका लोहे का कवच ही बचा था.

उनका जहाज़ लिवरपूल पर उतरा. वहां से फौग को सिर्फ एक ट्रेन पकड़कर लन्दन जाकर अपनी शर्त जीतनी थी. पर जैसे ही वे लोग जहाज़ से उतरे वैसे ही इंस्पेक्टर फिक्स ने अपनी चाल चली.

“फिलास फौग,” फिक्स ने कहा, “मैं तुम्हें पचपन हज़ार पौंड की चोरी करने के इलज़ाम में गिरफ्तार करता हूँ.”

फौग को जेल में बंद कर दिया गया. बटलर और राजकुमारी, फौग को बचाने के लिए कुछ नहीं कर पाए.

तीन घंटे बाद वे जब किसी खबर का इंतज़ार कर रहे थे तब फिक्स दौड़ा-दौड़ा आया. उसके बाल उलझे हुए थे और वो बहुत शर्मिंदा लग रहा था. “मैंने एक भयानक गलती की,” उसने रोते हुए कहा.

फौग अब दुबारा से मुक्त था. पर अब उसके पास सिर्फ साढ़े पांच घंटों का समय ही बचा था.

फौग एक विशेष ट्रेन से लन्दन के लिए रवाना हुआ. जैसे ही ट्रेन लन्दन स्टेशन पर पहुंची तब तक घड़ी में 8.55 बज रहे थे. फौग अपनी शर्त को दस मिनट से हार गया था.

मुझे यकीन नहीं होता! हम इतने करीब आये....

अध्याय 6
अगला क्या?

फौग पर क्या गुज़र रही थी इसका उसके चेहरे पर कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहा था. वो स्टेशन से अपने बटलर और राजकुमारी को लेकर सीधा अपने घर गया. उसने कितने पैसे खोए? अगले दिन उसने उसका हिसाब-किताब लगाया.

सुबह सात बजे फौग, राजकुमारी के कमरे में गया.

“मैडम, जब मैं इंग्लैंड वापिस लौटा तो मैं आपको बहुत धन-दौलत देना चाहता था. पर लगता है कि वो अब संभव नहीं हो पाएगा,” फौग ने राजकुमारी से कहा.

“महाशय, मुझे आपके पैसे नहीं चाहिए. मुझे तो सिर्फ आप चाहिए,” राजकुमारी से शरमाते हुए कहा.

यह सुनकर फौग बेहद प्रसन्न हुआ. उसने बटलर को बुलाया और कहा, “जल्दी से चर्च जाओ, और वहां कल के लिए हमारी शादी की बुकिंग करके आओ.”

इस बीच क्लब में फौग ने दोस्तों ने पिछले कई दिनों से काफी उत्तेजित थे. 2 अक्टूबर जब से फौग गया था तब से उन्हें फौग की कोई खबर नहीं मिली थी.

21 दिसम्बर की शाम को सब दोस्त बेसब्री से फौग के आने का इंतज़ार कर रहे थे. और जैसे ही घड़ी में 8.44 बजे वैसे ही दरवाज़े पर दस्तक हुई.

फिलास फौग अपने दोस्तों के सामने प्रत्यक्ष मौजूद था. पर फौग ने वो कैसे किया? जैसे ही फौग का बटलर चर्च के पादरी के पास से लौटा उसने एक अविश्वसनीय खबर सुनाई.

“कल सोमवार नहीं है,” बटलर ने हँसते हुए कहा. “कल तो इतवार है, और आज शनिवार है!”

क्योंकि फौग ने पूर्व की यात्रा की थी इसलिए उनका एक दिन बच गया था. क्लब जाकर शर्त जीतने के लिए उनके पास अभी दस मिनट बाकी थे.

फौग ने बीस हज़ार पौंड जीते. पर उस पूरी यात्रा में उनके कोई उन्नीस हज़ार पौंड खर्च भी हुए. इसलिए उन्हें कोई ख़ास फायदा नहीं हुआ.

पर उन्होंने इस यात्रा में पूरी दुनिया के सफ़र का मज़ा लूटा. साथ में उन्हें एक अच्छी पत्नी भी मिली. बहुत से लोग इससे कहीं सस्ते में दुनिया कीं यात्रा कर सकते थे.

Fogg's route

Arctic Ocean
Atlantic Ocean
Pacific Ocean
Indian Ocean
North America
South America
Europe
Africa
Asia
Australia

1 London, England
2 Paris, France
3 Turin, Italy
4 Suez, Egypt
5 Bombay, India
6 Allahabad, India
7 Calcutta, India
8 Singapore
9 Hong Kong
10 Shanghai, China
11 Yokohama, Japan
12 San Francisco, America
13 New York, America
14 Liverpool, England

जूल्स वर्न की प्रसिद्ध पुस्तक

अस्सी दिन में दुनिया की सैर

सौ साल बाद भी बच्चों

को खूप पसंद आएगी.